DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Samskrit
S.R.A.P. college, Bara chakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Sub. — Samskrit
Paper — II

15×3 = 45 Marks

1. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर दुर्योधन की शासन-व्यवस्था का वर्णन करें।

उत्तर:- जूए में दूसरी बार पराजित होकर शर्त के अनुसार युधिष्ठिर अपने भाईयों तथा द्रौपदी के साथ द्वैतवन में निवास करने लगे। वहाँ रहते हुए उन्होंने एक वनवासी किरात को दुर्योधन की प्रजा के प्रति नीति को जानने के लिए गुप्तचर नियुक्त किया। ब्रह्मचारी वेशधारी बनकर दुर्योधन के राज्य का समस्त वृतान्त जानकर युधिष्ठिर के पास लौटकर आया। उसने महाराज युधिष्ठिर को प्रणाम किया और एकान्त में उनका आदेश पाकर शब्द सौष्ठव एवं अर्थगाम्भीर्य से युक्त वचन कहने लगा — "हे महाराज! कार्य में लगाये गये सेवकों का यह कर्तव्य है कि वे स्वामियों को धोखा न दें, क्योंकि स्वामी लोग सेवकों के माध्यम से ही सब कुछ जानते हैं। अतः मेरे कथन में यदि कुछ अप्रिय बात हो तो उसे आप क्षमा करेंगे क्योंकि — "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।" जो मंत्री राजा को उचित राय नहीं देता वह कुत्सित होता है और जो राजा हितचिन्तक मंत्री की राय नहीं मानता वह योग्य नहीं होता। मंत्रियों और राजाओं में परस्पर अनुकूलता होने पर ही राज्य की समृद्धि होती है। राजाओं का चरित्र दुर्बोध्य होता है, मेरे जैसा मन्द बुद्धि व्यक्ति भला उसे कैसे जान सकता है? फिर भी शत्रुओं के गुप्त रहस्यों का जो कुछ भेद मैं पा सका, वह आप ही का प्रभाव है।

सिंहासन पर आसीन होकर भी दुर्योधन आपसे भयभीत है और पराजय की आशंका करता रहता है। अतः कपट द्वारा जीते गये राज्य को उत्तम नीति का आचरण कर अपने वश में करने के लिए वह प्रयत्नशील है। कुटिल होते हुए भी वह गुणों का अर्जन करके अपनी कीर्ति का विस्तार कर रहा है। काम-क्रोधादि मानसिक विकारों को जीतकर वह मनु द्वारा प्रतिपादित राजधर्म के मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहा है और दिन एवं रात्रि का विभाजन कर आलस्य त्यागकर अपने प्रभाव को बढ़ा रहा है। अहंकार रहित होकर वह सेवकों के साथ मित्रों की भाँति, मित्रों के साथ सम्बन्धियों की तरह और

P.T.O.

भाई-बिरादरों के साथ अत्यन्त सरीखे व्यवहार कर राज्य में सभी वर्ग को सम्मान देता है। वह धर्म, अर्थ और काम का समान रूप से सेवन करता है, इसलिए ये तीनों एक दूसरे के साथ बाधा उत्पन्न नहीं करते हैं। साम, दाम, दण्ड, भेदादि उपायों का भी दुर्योधन बड़ी दक्षता से प्रयोग करता है। मधुर वचन से लोगों को अपने वश में करने के लिए वह दान देता है और दान के साथ यथोचित सत्कार करता है।

न्यायपालन में दुर्योधन निष्पक्ष है और केवल कर्तव्यपालन की भावना से चाहे दुश्मन हो अथवा अपना पुत्र ही क्यों न हो, धर्मदृष्टि से जिसको दोषी समझता है उसी को दण्ड देता है। धन लोभ या क्रोध के वशीभूत होकर वह किसी को दण्ड नहीं देता। हर समय सबके ऊपर शक करता हुआ भी वह चारों ओर सब कार्यों में अपने रक्षकों को लगाकर स्वयं निश्शंक सा रहता है और कामकाजों के अन्त में दिया गया पुरस्कार ही दुर्योधन की कृतज्ञता प्रकट करती है। सभी उपायों का उसने सुन्दर ढंग से विनियोजन किया है और वे सुन्दर परिणाम उत्पन्न कर रहे हैं, उसकी समृद्धि का भविष्य उज्ज्वल बना रहे हैं। राजाओं द्वारा उपहार में दिये गये हाथियों का सप्तपर्णी पुष्प की गन्धवाला मद उसके सभामण्डप के आँगन को, जो अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरा हुआ है, अत्यधिक गीला बना रहा है।

कृषक वर्ग भी खुशहाल और बिना अधिक परिश्रम के ही नदियों के जल से ही सिंचाई करके फसल पा रहे हैं। वर्षा के ऊपर आश्रित नहीं हैं, क्योंकि दुर्योधन उनकी भलाई करने में तत्पर है। पृथ्वी उसके गुणों के कारण दुधारु गाय की तरह अनेक प्रकार के अन्न उत्पन्न कर रही है। उसके सैनिक भी अनुकूल हैं। वीर, यशस्वी, धनुर्धारी योद्धा बिना किसी गुटबन्दी और पारस्परिक विरोध के उसका प्रिय कार्य करने में प्राणों की बाजी लगाकर जुटे हुए हैं। स्वाभाविक दूतों के द्वारा वह अपने अधीन राजाओं की सभी बातों को जान लेता है। उसकी योजनाएँ इतनी गोपनीय रहती हैं कि कार्यसमाप्ति के बाद ही पता चलता है कि दुर्योधन क्या चाहता था। सभी राजा उसके मित्र हो गये हैं। उसे धनुष उठाने की या क्रोध करने की आवश्यकता ही नहीं है। राजागण उसकी आज्ञा को पुष्पमाला की तरह शिरोधार्य करते हैं। इन सबके अतिरिक्त वह धर्म-कार्य में भी लगा हुआ है। वह अपने अनुज दुःशासन को युवराज बनाकर स्वयं यज्ञ में निश्चिन्त होकर पुरोहित के आज्ञानुसार हव्य से अग्नि को सन्तुष्ट कर रहा है।

किन्तु इतना सबकुछ करते हुए और निष्कण्टक पृथ्वी का शासक होते हुए भी वह आपसे आनेवाले भय को सोचता ही है —

" कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः ।
तवाभिधानाद्व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः ॥ (किरा. 1/24)

तथापि वह आपके साथ कुटिलता करने में तत्पर है, अतः आप उसका यथोचित प्रतीकार करें।